एक पत्र खुदा दोस्त को

ऐ मेरे खुदा दोस्त मुझे अपने आप पर गर्व है कि आप हमारे दोस्त हैं,दुनिया शायद मेरी बात पर विश्वाश कभी नही करेगी, पर यह अविश्वनीय, अवर्चनीय सत्य है। क्योंकि ये दोस्ती समानता की नहीं हैं और दोस्ती हमेशा समान वालों से ही होती है और वही दोस्ती सदा काल चलती भी है, पर हमारे सामने कृष्ण–सुदामा एवं दुर्योधन और कर्ण का उदाहरण है जो असंभावी व पुराणों में प्रचलित है, ऐसी ही दोस्ती कुछ हमारी और आपकी है,वैसे दोस्ती में दोनों का सहयोग होता है पर हम आपका सहयोग क्या करेंगें और आपको किसी सहयोग की तो आवश्यकता ही नहीं है, आपने हमें उस समय दोस्त बनाया जब हम हर प्रकार से एकदम खाली हो चुके थे,आपने तो हमें सिर्फ दिया ही दिया है और आपकी एक विशेषता यह भी है जो दुनिया में किसी की भी नहीं हो सकती कि कोई कैसा भी संबंधी कितना भी कुछ करता हो पर सदा व सभी जगह नहीं कर सकता पर आप तो कभी भी और कहीं भी पहुँच जाते हो मदद के लिए,आपने हर घड़ी हमें अपनी नजरों में और हम पर नजर रखी,हमें कब क्या चाहिए,मेरा भला किसमें है यह आप बिना कहे ही आप जान जाते हो। जिन्दगी के किसी भी मोड़ पर हमने आप से मदद के लिए नजर घुमायी आप तुरन्त हाजिर हो जाते हो दूसरा आप सर्वशक्तिवान हो किसी का दोस्त शक्तिशाली तो हो सकता है पर सर्वशक्तिवान नहीं होता जिससे किसी की सदा विजय संभव नहीं पर मेरी हार कभी हो नहीं सकती। तीसरा आप सिर्फ दोस्त बनकर ही मदद नहीं करते हो,आप हमें हर संबंध से भी मदद कर देते हो,कितनी बार मदद किया यह तो गिनती ही नहीं किया जा सकता, इस पाप की दुनिया में,घनघोर

अज्ञान अँधेरे में जहाँ हरेक संबंध की गरिमा छिन्न-भिन्न हो गयी थी उस समय सच्चा दोस्त मिलना असंभव था पर ये हमारा सौभाग्य है कि जो आप जैसा मित्र हमें मिल गया, दोस्त भी कैसा, दुनिया का मालिक,तीनों कालों का ज्ञाता,भाग्यविधाता,वरदाता,नवयुग निर्माता,सर्वशक्तिमान,ऐ मेरे दोस्त तुम्हें लाखों- लाख सलाम।

ओ खुदा दोस्त है खिदमत में हाजिर है हजार भुजाओं से
अपनी किस्मत के कहने सिर पर है हाथ दुआओं का
ऐसा साथी किसका होगा ये सोच आँख भर आती है।

मेरे दोस्त तुम्हारी दोस्ती की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती व बदले में कुछ किया भी नहीं जा सकता है क्योंकि आप वर्तमान तो क्या भविष्य 21 जन्मों तक हमें सुखी बना देते, काश आपके जैसा दोस्त सभी को मिले, परन्तु एक बात तो हम भी करते हैं वा आगे भी करते रहेंगें ये हमारा आपसे वादा है-

अपनी दोस्ती व दोस्त के प्रति हम सदा ईमानदार ,वफादार,व सच्चे रहेंगें। दोस्त वैसे आपकी दुनिया में सदा एक ही रंग है पर इस दुनिया में तो हर पल रंग बदलता है,कभी आप भी इस दुनिया में मेरे साथ इस दुनिया की वादियाँ तो देखो। दोस्त आपकी ही रचना स्वर्ग है कभी आपका दिल नहीं करता कि जाकर देख कर तो आऊँ और आज की दुनिया इतनी जड़जड़ीभूत हो गयी है कितनी तकलीफें यहाँ होगी? माया का कितना प्रकोप हेगा? अरे दोस्त अगर यहाँ आओ ना, तो आपको पता पड़ेगा रावण हम सबको कितना रूलाता आया है,यहाँ उसकी गुलामी से बचना नामुमकिन है,एक बार आप भी हमारे जैसे आते तो फंस जाते ,पर दोस्त अच्छा हुआ जो आप ऐसे नहीं

आते हो,नहीं तो हम सबको कौन छुड़ाता। दोस्त आपकी की भी कमाल जो आप हमारे लिए अपने वतन से हमसे मिलने सब काम छोड़कर आ जाते हो और रोज हमारे लिए बिना नागा किये शिक्षा सावधानी भरा पत्र लिखते हो।

अच्छा दोस्त ये तो बताओ ,आप तो कहते हो कि हम किसी को क्यों याद करूँ, मैं किसी को याद नहीं करता, पर बिना याद किये आपने हमें ढूंढ़ा कैसे? दोस्त और किसी को आप याद करते हों या न करते हो ,पर हमें अवश्य याद कर लेना हमें न भुलाना,क्योंकि हमारे जैसे तो आपको बहुत मिल जायेंगे या हैं भी, परन्तु हमारे लिए तो सिर्फ आप ही हैं। पूरे 5000 वर्ष के बाद मिलते हो वह भी कितने कम समय के लिए हमारी दोस्ती चलती है। आपसे बिछड़ कर जबसे हमारी दोस्ती रावण से हुई थी तबसे हमने आपको कितना भला–बुरा भी कहा होगा पर आपने हमारी किसी भी गल्ती को फील न कर हमारी नासमझी समझ हमें माफ कर हमें फिर से योग्य मित्र बनाते हो, दोस्त आपने हमारे जीवन को इतना उज्ज्वल व श्रेष्ठ बनाया इसका उपकार भला हम क्या दे पायेंगे? और क्या दे सकते हैं? बस आपकी महिमा के गुण गाते रहेंगे व शुक्रिया करते रहेंगे।

हम तुम्हें क्या बाबा, हम कहाँ देने के काबिल
ये तुम्हारी ही इनायत,जो किया इतना मुकम्मिल।
बदले में हम क्या करें,है कुछ नहीं आता समझ में,
बस करेंगें जिन्दगी भर शुक्रिया ही शुक्रिया ।।

ओमशान्ति